11 मई, 2015

स्मृति

मीठे बच्चे: तुमने 84 का चक्कर पूरा किया है । तुम बच्चों को अब यह समृति होनी चाहिए । तुम जानते हो कि बाबा आऐं हैं तुम्हें फिर से राजधानी का वर्सा दिलाने और तुम्हें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने । तुम संसार के मालिक थे; तुम देवता थे ।
प्यारे बाबा, पूरे दिन मैं इस बात स्मृति की पुष्टि करता रहूँगा: कि मैंने 84 जन्म पूरे किये हैं । मैं पढ़ाई को याद रखूंगा, कैसे मैं विश्व का मालिक था और फिर मैं नीचे उतरा ।

स्मृर्थी

ऊपर की स्मर्ती से प्राप्त होने वाली शक्ति से मैं स्वयं को निरंतर सशक्त अनुभव कर रहा हूँ । मुझमें इस बात की जागृती आ रही है कि मेरी स्मृर्ती से मेरा स्वमान बढ़ता जा रहा है । मैं इस बात पर ध्यान देता हूँ कि मेरी स्मृर्ती से मुझमें शक्ति आ रही है और इस परिवर्तनशील संसार में मैं समभाव और धीरज से कार्य करता हूँ ।

मनो-वृत्ति

बाबा आत्मा से: तुम्हारा मुख्य अवगुण जो तुम्हें बाप से बेमुख कर देता है वह है दूसरों के बारे में सोचना, ईविल और व्यर्थ बातों को सुनना और बोलना । बाप की आज्ञा है: खराब बातों को नहीं सुनो । आप बच्चों को इसकी बात उसको और उसकी बात इसको बताने के व्यर्थ कार्य में लिप्त नहीं होना चाहिऐ । धूतिपना छोड़ दो ।
त्यागवृत्ति को अपनाने का मेरा संकल्प दृढ़ है । मैं दूसरों के बारे में सोचना छोड़ दूँगा । मैं और सब से अपना बुद्धियोग हटा कर एक राम से ही योग लगाऊंगा ।

दृष्टि

बाबा आत्मा से: बाप निराकारी है और आप आत्मा भी निराकारी हो ।
मेरा दृढ़ संकल्प है कि जिससे भी मैं आज मिलूँ उसको निराकारी आत्मा ही देखूँ ।

लहर उत्पन्न करना

मुझे शाम 7-7:30 के योग के दौरान पूरे ग्लोब पर पावन याद और वृत्ति की सुंदर लहर उत्पन्न करने में भाग लेना है और मन्सा सेवा करनी है । उपर की स्मृर्ति, मनो-वृत्ति और दृष्टि का प्रयोग करके विनिम्रता से निमित् बनकर मैं पूरे विश्व को सकाश दूँगा ।